Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

ऐतिहासिंक काल से नारी की स्थिति

Parmar Rekhaben Manubhai*

नारी के प्रति दोहरा दृष्टिकोण प्रत्येक काल मे रहा है । वैद्रिक युग मे नारी की स्थिति को मात्र कुछ स्त्रियो के उल्लेख के माध्यम से उतम बताया गया है । जो ब्राह्मण, विद्वान ऋषि मुनियो के परिवार की पुत्री या पत्नी थी । स्मृतिकाल मे नारी की स्थिति अत्यधिक दिन-हिन बना दि गई थी, जिस्का उल्लेख बहुत ही सामान्य भाग से बताया गया है । रामायण और महाभारत काल में भी नारी के स्थिति की दो रूप है- कही सम्मानित और अधिकार सम्पन्न है, ते कही अपमानित अधिकार-हिन ।

<u>प्रागैतिहासिक काल (पाषाण युग) की नारी</u>

मानव जिस दिन से इस धरती पर आया तब से उसकी सामाजिक आर्थिक और वैज्ञानिक प्रगति को मानव इतिहास का नाम दिया गया है । मानव इतिहास को दो भागो में विभाजित किया गया है- प्रागैतिहासिक युग और ऐतिहासिक युग । ऐतिहासिक युग का प्रारभ्भ तब से हुआ. जब से लिखने की कला उदभव हुआ । प्रागौतिहासिक युग मानव इतिहास का वह युग है, जब लिखने का,मनुष्य को ज्ञान नहीं था,फिर भी वह अपने युग से इतिहास गठ रहा था । प्रागौतिहासिक काल में पत्थर या पाषण का उपयोग अधिक किया जाता था । इसलिए इसलिए इसे 'पाषण युग' भी कहते है । मानव विज्ञान स्त्रीयो का कथन है कि उस समय स्त्रियो का महत्व अधिक था । नारी की स्थिति पुरुष से श्रेष्ठ मानी जाती थी ।

"उस समय समाज में स्त्री का अधिकार अधिक था, जिसे मातृसता या मातृशाही कहते है। मनुष्य के आदिम काल की प्रथम स्त्री होती थी मनुष्य को संधशक्ति का पता बहुत पहले लग गया था । विवाहहीत समाज में माता ही परिवार का मूल थी "[1]

<u>वैदिककाल की नारी</u>

भारतीय इतिहास में वैदिककाल को दो भागों मे बाटा गया है । (१) ऋग्वेदकाल (२) उतरवैदिक काल । चारो वेदो मे ऋग्वेद आर्थ जाति का जिवन दर्पण है । वह धर्म,संस्कृति,ज्ञान,विज्ञान,कला एवं साहित्य का अक्षय भंडार है, भारतीय काव्य परम्परा की श्रृंखला की वह प्रथम कडी है । ऋग्वेद मे जिस सभ्यता का वर्णन है, वह वैदिकयुग की सबसे प्राचिन है । इस सभ्यता का विकास उतर वैदिककाल में हुआ ।

"वैदिक युग में नारी नर के अधिकारो के निकट थी । घर बाहर सभी जगह असका सम्मान था । नारी के विकास एवं अधिकार की दष्टी से वैदिक युग का इतिहास भारतीय नारी का स्वर्णकाल है । वैदिक समाज में स्त्रियो की स्थिति जितनी ऊची थी उतनी बाद में कभी नहीं रही ।"[2] इसमें एक स्त्री, एक ही पुरूष की पत्नी होती थी । किन्तुं इसमें कालिक परिवर्तन हो सकता था ।

" संगढन के सिद्धान्त और व्यवहार मे, स्त्रियो का पद ऊंचा था । साधारण जीवन के अतिरिकत समाज के मानसिक एवं धार्मिक नेतृत्व मे भी स्त्रियो का हाथ था ।"[3] स्त्रियां सामाजिक जिवन में पुरा भाग लेती थी । उस समय पद की प्रथा नहीं थी । स्त्रियो को सामाजिक समारोहो से दुर रखने की पद्धति नहीं थी।

---

*परमार रेखाबेन मनुभाई, शोधार्थी गुजरात यूनिवर्सिटी अहमदाबाद (गुजरात)

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

स्त्रियो का पुरुषो के समान उपनयन संस्कार होता था। इसके उपरान्त वैदिक शिक्षा के साथ ही वे यज्ञादि सम्पादन कर सकती थी। सामान्यत धार्मिक उपासना तथा प्रार्थना दम्पति मिलकर करते थे। पत्नी के बिना धार्मिक कार्य सम्पादन अधुरा समझा जाता था। पत्नी पति के शरीर का आधा भाग मानी जाती थी। पारिवारिक यज्ञ मे नारी का क्रियात्मक सहयोग रहता था। वैदिक युग मे स्त्रियां भी पुरुषो की तरह शिक्षा ग्रहण करती थी।

वह और शास्त्रो मे पारंगत होने के अतिरिक्त स्त्रिया ऋचाओ की रचना भी करती थी। साहित्य के साक्ष्य के अनुसार विखरा,लोपामूद्रा,सिक्ता, नियावरी और घोषा ऋग्वेद की प्रतिभाशाली कवियांत्रियाँ है। जिन स्त्रियो मे धार्मिक साहित्य रचने की शक्ति थी, उनकी अपनी इस प्रवृति के अनुसार चलने मे किसी प्रकार की रुकावट नहीं थी। कई स्त्रिया ऋषि थी। अनकी रचनाए भी पुरूषो की रचनाओ की तरह आज भी ऋग्वेद संहिता मे सम्मानित है।

शिक्षा,साहित्य,समाज, धर्म, गृहकाम, आमोद-प्रमोद एवं युद्ध-सभी क्षेत्रो मे असकी गति रहती थी। वैदिक युग उसके ऐतिहासिक विकास की चरम परिगति का काल था। पति गृह का स्वामी और पत्नी गृहस्वामिनी होती थी। सदाचार का भाव वहुत ऊंचा था। बाल विवाह अज्ञात था। कुमारी कन्याह पिता की रक्षा मे रहती थी और असकी मृत्यु के बाद भाई की रक्षा मे रहती थी। पुत्र के अभाव मे पुत्री ही पिता की सम्पति की उत्तराधिकारीणी होती थी। दत्तक लेने का अधिकार भी था।

स्मृतिकाल मे पुरुष प्रधानता को मान्यता थी। नारी को याज्ञिक अधिकारो से वंचित करने का प्रयास किया गया। यधापि यज्ञो से धर्मपत्नी के रूप मे नारी को बहिष्कृत नहीं कीया जा सका, तथापि उसके धार्मिक अधिकारो को सिमित और संकुचित कर दिया गया। धार्मिक क्षेत्र में असको अपवित्रता और पारिक अनुययुक्ताता का विचार प्रचलित हो गया। इसकी प्रतिध्वनि उतर वैदिक साहित्य के उतरार्ध मे सर्वत्र मिलती है। स्त्रियों का धार्मिक अनुष्ठानो से बहिष्कार कोई आकास्मिक घटना नहीं थी। उनके अधिकारो का अपहरण वडी मन्द गति से हुआ। यज्ञ के अनुष्ठान धीरे-धीरे स्त्रियो के हाथ से निकलकर पुरोहितो के अधिकार क्षेत्र में आने लगे। ईस युग मे पुरुषपक्षी प्रवृतियां उग्र हो गई।

रामायण काल मे नारी

रामायण मे कवि द्वारा वर्णित नारी के क्रमिक विकास के स्वरूपो तथा स्थितियो का अवलोकन किया जा सकता है। अदिकवि वाल्मीकि ने नारी को जीवन सुलभ सहज मनोवृतियो की छाया में यथावसर स्वाभाविकता के साथ प्रस्तुत किया है। माता कौशल्या का वात्सल्य तथा सहचरी सीता का अतुलनीय आदर्श प्रेम राम के जीवन के प्रेरणास्त्रोत बने रहे। सीता कन्या,वधु,पत्नी,भाभी आदि रूपो मे अपनी वंश मर्यादा के अनुसार तथा परिस्थितियो के अनुकुल आवरण करती है। इस प्रकार वह नारी समाज के समक्ष एक आदर्श उपस्थित करती है।

"धार्मिक व सामाजिक कार्य मे स्त्री को प्रमुखता दी जाती थी। वाल्मीकि ने पत्नी को महत्व दिया है। प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्य मे पत्नी की सहधर्मचारिणी होती थी। अस्वमेध यज्ञ तथा पुत्रष्टि यज्ञ के समय राजा दशरथ के साथ अनकी पत्नी कौशल्या थी। "[4] रामायण में नारीको सत्य,दया,आत्मत्याग,धैर्य जैसी उदान्त भावनाओ से परिपूर्ण बताया गया है। वाल्मिकि रामायण मे आदर्श के धरातल पर ही नारी का स्वरूप अंकित किया गया है। रामायण मे नारी को अवध्या कहा है। ईससे नारी के प्रति सम्मान प्रकट होता है। नारी के प्रति सामाजिक शिष्टाचार की भावना थी। नारी को शिक्षा के क्षेत्र मे पारिवारिक कार्य कलापो

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

मे सामाजिक समारोहो में तथा राजनैतिक विषयो मे पूर्ण अधिकार थे । पुत्री का जन्म अमंगलकारी नही माना जाता था । रामायण काल मे स्त्रीयां यदि चाहे तो जीवन भर ब्रह्मवादिनी बन कर रह सकती थी।

यर्घपि रामायण काल मे दहेज प्रथा मान्यता नहीं थी यथाशक्ति कन्या को विवाह मे उपहारस्वरुप कुछ न कुछ दिया जाता था । रामायण के अनुसार स्त्री के लिए पति ही देवता बन्धुं एवं गुरू है । वाल्मिकि ने नारी के लिए समय को अति आवस्यक माना है । पति की प्रत्येक स्थिति मे असका साथ देना एवं असके कार्यो मे परामर्श देना भी स्त्रीयो का धर्म माना गया है । इस विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि रामायण काल मे पुरुष का प्रभाव अधिक था और स्त्री उसके अधीन थी । अत : उसे पुरुष की प्रत्यक अवस्था मे सामजस्य करना पडा था ।

महाभारत काल में नारी

वेदव्यास द्वारा संकलित 'महाभारत' बहुत विशाल ग्रन्थं है । ईसे काव्य न कहकर ऐतिहासिक गाथाओ का संग्रह कहना अधिक अपयुक्त होगा । महाभारत के प्रमख नारी पात्रो मे गान्धारी,कुन्ती, द्रौपदी, मादि आदी का वर्णन किया गया है । ईन स्त्रियो के चरित्र मे औजस्विता के साथ कमनीयता का भी समिश्रण दिखाई देता है । महाभारत मे सर्वत्र नारी का सहयोग दिखाई देता है । वे पूर्ण अर्थ में पुरुष की कर्मसंगिनी थी सहयोगी थी ।

साधारण समाज की या निम्नस्तर की नारीयो के सम्बन्ध मे कोई अदाहरण नही मिलता । उनके सम्बन्ध मे कामकाज के आधार पर, केवल अनुमान किया जा सकता है। महाभारत की नारी शैक्षणिक विकास कि दष्टि से उन्नत नही कही जा सकती महाभारत काल में नारी का कार्यक्षेत्र मुखयत धर पर था । वे अर्थापार्जन के दायित्व से मुक्त थी । सामाजिक क्षेत्र मे अनकी गतिविधिया सिमित थी । इसका कारण यह था कि सैद्वान्तिक रुप में नैतिक जीवन के आदर्श ऊंचे थे किन्तुं सामाजिक व्यवहार मे स्त्रियो का अस्तित्व सुरक्षित न था । शत्रुओ का अत्याचार तथा डाकुओ का भय था ।

वैदिक युग में स्त्रियो की शिक्षा प्रचलित थी, किन्तु महाभारत काल तक कन्याओ द्वारा वेदाअध्ययन की परपंरा नष्ट हो गयी थी । लोगो की यह धारणा बन गयी थी की स्त्रिया शास्त्र ज्ञानरहित होती है । कुछ स्त्रियां वेद ज्ञान की ज्ञाता भी होती थी,किन्तु शकुन्तला इसके उदाहरण है ।

अत : कहा जा सकता है कि उस काल की स्त्रियो की शिक्षा जीवन सापेक्ष होती थी, साक्षात व्यवहारिक जीवन की गतिविधियो पर आधारित होती थी। इसके साथ यह तथ्य भी सत्य है कि उस काल की स्त्रियो मे कर्म के स्थान पर भावना ही अधिक होती थी । भरी सभा मे द्रौपदी की दुर्दशा देखकर कौरव स्त्रिया मात्र आंसु बहाती रही परन्तुं किसी में भी इतना साहस नहीं था कि वे दुर्याधन को रोक कर, अन्याय का सामना करे । गान्धारी भी जीवन भर मात्र भावना के वशीभुत होकर आंखो पर पट्टी बांधे रही । ईसके अतिरिक्त असमे कुछ और करने का साहस नही था । ईससे ज्ञात होता है कि महाभारत काल की स्त्रियो की शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा थी, जो उनके हृदय मे सात्विक गुणो का विकास तो कर सकती थी किन्तुं सशक्त व्यक्तित्व का विकास नही ।

उस काल मे नारी का पतिव्रता एवं उतम गृहिणी वनना ही समाज का आदर्श था उस काल के समाज मे नारी को गृहलक्ष्मी के रूप मे पाना ही सौभाग्य की बात थी । "स्त्रियां घर की लक्ष्मी मानी जाती थी ।"[5] "नारी को इस प्रकार का आदर पाने के लिए अपने शील तथा सदगुणो से घर की सौख्य वृद्धि का उतरदायित्व अपनाना पडता था । सुखभाग सुव्रत वाली अनन्य स्वामिभक्त तथा सुमुखी नारियां परिवार मे

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

यथेष्ट आदर पाती थी ।"[6] महाभारत काल मे सामाजिक तथा शारीरिक दोनो ही दष्टी से स्त्री को रक्षणीय एवं अपरिहार्य बताया गया है । महाभारत में भी किसी भी अवस्था मे स्त्री के स्वातंत्र्य को मान्यता नहीं दि गयी है । वे वय के अनुसार पिता, पति व पुत्र के आधीन मानी गयी है । स्त्री के लिए यज्ञ आदि कर्म, श्राद्ध व उपवास करना आवश्यक नही माना गया था । स्त्री के लिए पति सेवा ही बडा धर्म था । राजकुल की स्त्रियां आपातकाल मे राज्याधिष्ठित होती थी और राजमाता के रूप मे शासन मे सहयोग देती थी । और राजमाता के रूप मे श्राद्ध मे देय.द्रव्य स्वरूप एवं किसी विशेष व्यक्ति के सम्मान स्वरूप अन्य द्रव्यो के साथ अलंकृता नारी भी दान की जाती थी । महाभारत मे इसके कई उदाहरण है ।"[7]

घर और वन सभी जगह नारी अपने पति की परम सहायक एवं सहधर्मिँणी रही है । नारी के तेजस्वी रूप भी दिखाई देते है । गान्धारी और कुन्ती अत्यंत तेजस्वी नारी थी । स्त्रिया किसी उदेश्य या मोक्ष प्राप्ति के लिये तपस्या भी कर सकती थी ।

"ईस काल मे स्त्रियो के शास्त्र ज्ञान के उदाहरण तो मिलते है किन्तुं साथ ही कुछ स्थानो पर इसे स्त्रियो का अनाधिकार बताया गया है ।"[8]

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक काल में नारी के सम्बन्ध मे जितने भी वर्णन मिलते है वे सब एक दुसरे के अन्तॅविरोधी लगते है जिससे सामंजस्य बनाये रखना कठिन लगता है । जहां नारी को नरक द्वार कहा गया है, वही इसे स्वर्गारोहण का सोपान भी बताया गया है । साधारणत स्त्रियो की प्रशंसा के साथ निन्दा भी की गयी है । मनुष्य के चरित्र मे जितने भी प्रकार के दोष हो सकते है वे सब नारी के चरित्र मे होते है । कहीं नारी सम्मानित और अधिकार सम्पन्न है तो कहीं अपमानित अधिकार हीन । नारी के प्रति दोहरा द्रष्टिकोण प्रत्येक काल में रहा है ।

संन्दर्भ ग्रंन्थ

(1) भारतीय नारी समाज और साहित्य के ऐतिहासिक संन्दर्भो मे पृ.11,12
(2) वही पृ.14
(3) वही पृ.15
(4) वही पृ.28
(5) वही पृ.42
(6) वही पृ.42
(7) वही पृ.44
(8) वही पृ.49